Toppersnotes
Unleash the topper in you

उत्तर प्रदेश पुलिस
कांस्टेबल

UTTAR PRADESH POLICE RECRUITMENT & PROMOTION BOARD

भाग – 5

सामान्य अध्ययन -2

SIERRA INNOVATIONS

इतिहास

1. सिंधु घाटी सभ्यता 1
2. वैदिक काल 4
3. बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म 9
4. महाजनपद काल 14
5. मौर्यकाल एवं प्रशासनिक व्यवस्था 16
6. मौर्योत्तर काल 21
7. गुप्त काल 24
8. अन्य प्रमुख प्राचीन कालीन वंश 29

मध्यकालीन इतिहास

1. इस्लाम एवं अरब आक्रमण 35
2. सल्तनत काल एवं इसकी प्रशासनिक व्यवस्था 36
   - गुलाम वंश
   - खिलजी वंश
   - तुगलक वंश
   - सैय्यद वंश
   - लोदी वंश
3. मुगल काल एवं इसकी प्रशासनिक व्यवस्था 46
   - बाबर
   - शेरशाह सूरी
   - हुमायूँ
   - अकबर
   - जहाँगीर
   - शाहजहाँ
   - औरंगजेब
4. विजयनगर साम्राज्य 58

5. बहमनी साम्राज्य 59
6.सूफीवाद 60
7.भक्ति एवं ऋषि आन्दोलन 61
8.मराठा साम्राज्य 64

आधुनिक भारत

1.भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन 65
2.बंगाल एवं प्लासी का युद्ध 67
3.मराठा शक्ति का उत्कर्ष 68
4.लॉर्ड वेलेजली एवं सहायक संधि प्रथा 72
5.अंग्रेजों की भू-राजस्व पद्धतियाँ एवं न्यायिक सुधार 73
6.गवर्नर जनरल, वायसरॉय एवं इनके कार्य 77
7.1857 की क्रांति 83
8.1857 की क्रांति के पूर्व के विद्रोह 87
9.सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आन्दोलन 90
10.भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 95
11.भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन एवं इसके चरण 97
12.1909 का भारत परिषद् अधिनियम 100
13.गाँधी युग 101
14.जलियाँवाला बाग हत्याकांड 103
15.1919 माण्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार 104
16. असहयोग आन्दोलन एवं साइमन कमीशन 104
17. गाँधी-इरविन समझौता 108
18. भारत छोडो आन्दोलन 111
19. क्रांतिकारी आन्दोलन 113
20. भारतीय कला एवं संस्कृति 123

भूगोल

1.आकृति एवं विस्तार 132
2.भारत के भौगोलिक भूभाग –
हिमालय, मैदान, पठार, तटीय क्षेत्र, द्वीप 133
3.भारतीय मानसून 141
4.भारत का अपवाह तंत्र 143
5.भारत में प्राकृतिक वनस्पति एवं मृदा 147
6.जलवायु 152
7.भारत के प्राकृतिक संसाधन 153
8.भारत के प्रमुख उद्योग 156
9.परिवहन तंत्र 158
10.कृषि 160
11.विश्व भूगोल 163
- ब्रह्माण्ड एवं सौर मण्डल
- भू-आकृतिक
- जलवायु विज्ञान
- समुद्र विज्ञान
- जैव भूगोल
- आर्थिक भूगोल
- सामाजिक एवं सांस्कृतिक भूगोल
- विश्व के महाद्वीप

12.पर्यावरण अध्ययन 181

अर्थव्यवस्था

1. अर्थव्यवस्था एवं इसके क्षेत्र 200
2. राष्ट्रीय आय 202
3. मुद्रास्फीति 203
4. बैंकिंग 205
5. वित्तीय समावेशन 208
6. राजकोषीय नीति एवं बजट 211
7. कर एवं जीएसटी 214
8. व्यापार नीति एवं FDI 216
9. विनिमय दर 218
10. अन्तर्राष्ट्रीय संगठन 219
11. वित्त आयोग, PDS, एवं MSP 222
12. सब्सिडी एवं ई-कॉमर्स 223
13. बेरोजगारी एवं गरीबी 223
14. आर्थिक विकास 225
15. पंचवर्षीय योजनायें 226
16. अन्य महत्वपूर्ण तथ्य 228

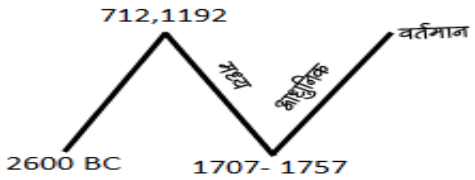

कालक्रम

1. 2600	BC – 1900 BC	सिन्धुघाटी सभ्यता
2. 1900	BC – 1500 BC	----------
3. 1500	BC – 1000 BC	ऋग्वैदिक काल
4. 1000	BC – 600 BC	उत्तरवैदिक काल
5. 600	BC – 321 BC	महाजनपद काल (बौद्ध, जैन)
6. 321	BC – 184 BC	मौर्य काल
7. 184	BC – 321 AD	मौर्योत्तर काल
8. 319	AD – 550 AD	गुप्तकाल
9. 606	AD – 647 AD	हर्षवर्द्धन
10.750	AD – 1000 AD	राजपूत काल
11.1192 (1206)	– 1526 AD	सल्तनत काल
12.1526	AD – 1707 (1858)	मुगल काल
13.1707 (1757)	– वर्तमान	आधुनिक काल

प्राचीन काल में भारत
सिन्धु घाटी सभ्यता

- इसे हड़प्पा सभ्यता भी कहा जाता है ।
- यह कांस्ययुगीन सभ्यता थी ।
- यह विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं मे से एक है । उत्कृष्ट नगर व्यवस्था एवं जल निकासी व्यवस्था इसको विशिष्ट बनाती है ।
- चार्ल्स मेसन – 1826 ई. सबसे पहले सभ्यता की ओर ध्यान आकर्षित किया ।
- जॉन बर्टन व विलियम बर्टन – 1856 ई हड़प्पा नगर का सर्वे किया ।
- सर जॉन मार्शल (ASI – महानिदेशक) – 1921 ई पूर्व
  इन्होने दयाराम साहनी को हड़प्पा मे उत्खनन करने के लिए नियुक्त किया ।
- कालक्रम – 2600 से 1900 B.C. (New Ncert)
  रेडियो कार्बन (C^{14})
  2250 से 1
  750 B.C. (Old Ncert)

विस्तार –

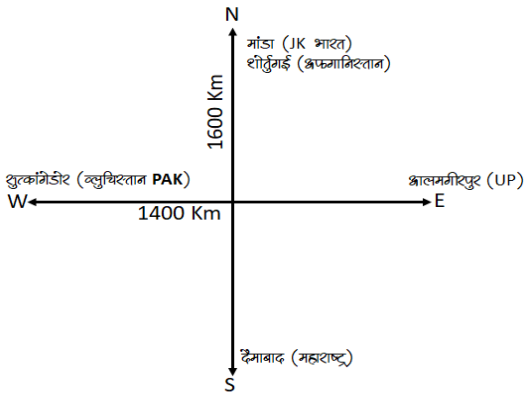

- पिग्गट ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो को सिन्धु सभ्यता की जुड़वा राजधानी बताया है ।
- धोलावीरा एवं राखीगढी भारत में सबसे पुरातन स्थल है ।
- आजादी के समय अधिकांश पुरास्थल पाकिस्तान मे चले गये ।
- बड़े नगर (पाकिस्तान)
  गनेडीवाल
  हड़प्पा
  मोहनजोदड़ों

नगर नियोजन –

- उत्कृष्ट नगर व्यवस्था
  सिन्धु घाटी के समकालीन सभ्यताओं मे इस विशेषता का अभाव ।
- नगर ग्रिड पद्धति पर आधारित थे अर्थात शतरंज के बोर्ड की तरह सभी नगरों को बसाया था । सभी मार्ग समकोण पर काटते थे ।
- सबसे चौड़ी सड़क 34 फिट की मिलती है जो सम्भवतः राजमार्ग रहा होगा ।
- घरो मे उत्कृष्ट नाली व्यवस्था (जल निकासी हेतु)
- बड़ी नालियो को ढक कर रखते थे ।
- भवन के अन्दर सामान्यतः 3 या 4 कक्ष, रसोईघर, 1 विद्यालय स्नानागार एवं कुआं होता था ।
- कालीबंगा से अलंकृत ईंटें प्राप्त होती है ।
  कच्ची एवं पक्की ईंटो का प्रयोग करते थे ।
  ईंट का आकार – 1 : 2 : 4
- कालीबंगा से लकड़ी की नालियों के साक्ष्य मिलते है

- ## राजनीतिक व्यवस्थाः –

ज्यादा जानकारी नहीं है । सम्भवतया पुरोहित राजा (Prist King) या व्यापारी वर्ग के हाथ में शासन व्यवस्था रही होगी पिग्गट ने ------- जुडवा राजधानी ---

- ## आर्थिक व्यवस्था –

कृषि

- खेती व्यवस्था – प्रमुख कार्य
- कालीबंगा से जुते हुए खेतों के साक्ष्य मिले हैं । एक साथ दो – दो फसल बोने के साक्ष्य मिले हैं (कालीबंगा)
- गेहूँ मटर, जौ, तिल, मोटा अनाज (ज्वार), रागी का प्रयोग करते थे ।
- उत्तर हडप्पा काल मे चावल के साक्ष्य भी मिलते हैं । लोथल से चावल के दाने एवं रंगपुर से चावल की भूसी मिली है ।
- सिंचाई (कुँओ एवं) नदियो के माध्यम से होती थी
- नहरों के साक्ष्य भी मिलते हैं – शौर्तुगई नदी के किनारे स्थित)
- धौलावीरा से कृत्रिम जलाशय के साक्ष्य मिले हैं । सम्भवतः नहरो के माध्यम से सिंचाई करते थे ।
- अधिशेष उत्पादन (ैनतचसने च्तवकनबजपवद) होता था हडप्पा तथा मोहनजोदडो से विशाल अन्नागार के साक्ष्य मिलते हैं ।

पशुपालन

- बैल, भैंस, बकरी, भेड, खरगोश, कुत्ता आदि पालतु पशु थे ।
- घोडे एवं ऊँट से ज्यादा परिचित नहीं थे । सुरकोटडा से घोडे की अस्थियाँ मिलती हैं ।

उद्योग

- चुन्हुदडों एवं लोथल से मनके बनाने का कारखाना मिलता है ।
- चाक पर बर्तन बनाने का कार्य होता था ।
- भट्टे के साक्ष्य भी मिलते हैं । कच्ची व पक्की ईंटो का प्रयोग होता था ।
- सोना, चाँदी, ताँबा, टिन आदि से परिचित थे । (ताँबा . टिन त्र कांस्य)
- बहुमूल्य पत्थर ष्कार्नेलियोनष का प्रयोग भी करते थे ।

धार्मिक स्थिति – (धार्मिक जीवन)

- बहुदेववाद में विश्वास रखते थे ।
- मूर्तिपूजा करते थे ।
- मन्दिरो के साक्ष्य नहीं मिलते ।
- अग्निकुण्ड प्राप्त होते हैं ।
- मातृदेवियों की मूर्तियाँ मिलती है ।
- पशुपतिनाथ की मोहर प्राप्त होती है । इस मोहर पर बाघ, हाथी, बैल, गैंडा व हिरण के चित्र मिलते हैं सर जॉन मार्शल ने सर्वप्रथम इसे पशुपतिनाथ कहा था ।
- आत्मा की अमरता मे विश्वास रखते थे ।
- हडप्पा से स्वास्तिक का चिह्न प्राप्त होता है ।
- लिंगपूजा, यौनिपूजा, वृक्ष पूजा मे विश्वास रखते थे
- बलि प्रथा का अनुमान भी – जैसे – चन्हूदडों की मुहर पर बलि के दृश्य
- वृक्ष, पशु, साँप, पक्षी आदि की भी पूजा, सूर्य पूजा
- पुनर्जन्म मे विश्वास – 3 तरह के दाह संस्कार
- हडप्पा से एक मृण्मूर्ति के गर्भ से एक पौधा निकला दिखाया गया है, जो उर्वरता की देवी का प्रतीक है

आर्थिक स्थिति/व्यापारः –

- कृषि आधारित अर्थव्यवस्था थी ।
- अधिशेष उत्पादन होता था जिन्हे बडे बाजारों/शहरों मे बेचा जाता था ।
- गेहूँ, सरसों, चना, मटर, रागी प्रमुख फसलें थी ।
- इन्हें चावल एवं बाजरे का ज्ञान नहीं था ।
- लोथल से चावल के साक्ष्य मिलते हैं ।
- रंगपुर से चावल की भूसी मिलती हैं ।
- रंगपुर उत्तर हडप्पा स्थल हैं ।
- शोर्तुगई (अफगानिस्तान)व्गने त्पअमत के किनारे से नहरों के साक्ष्य मिलते हैं ।
- धौलावीरा से जलाशय के साक्ष्य मिलते हैं ।
- यह पशुपालन भी करते थे ।
- गाय, भैंस, भेड, बकरी, खरगोश, कुत्ता एवं बिल्ली इनके प्रिय पशु थे ।
- यह ऊँट, घोडा, हाथी से परिचित नहीं थे ।
- विदेशी व्यापार होता था ।
- सारगोन अभिलेख मे सिन्धु घाटी सभ्यता को ष्मेलुहाष कहा गया है ।
- मेलुहा हाजा (मोर) पक्षी के लिए प्रसिद्ध है ।
- सारगोन अभिलेख में कपास को सिण्डन कहा गया है ।
- कपास की विश्व मे प्रथम खेती भारत में हुई ।
- दिलमून (बहरीन) व आखन (ओमान) मध्यस्थ का कार्य करते थे ।

- मुद्रा व्यवस्था का प्रचलन नहीं था ।
- वस्तु विनिमय होता था ।
- यह सोने व चाँदी का प्रयोग करते थे ।
- लोहे से परिचित नहीं थे ।
- ताँबा . टिन त्र कांस्य
- बालाकोट (चझ) से शंख उद्योग के अवशेष मिलते हैं ।
- माप की दशमलव प्रणाली

मूर्तियों एवं मुहरेः -

- यहाँ से 3 तरह की मूर्तियाँ मिलती हैं -
  1. धातु की
  2. पत्थर की
  3. मिट्टी की (टेराकोटा)
- मोहनजोदडो से नर्तकी की मूर्ति (धातु की)
- दैमाबाद से धातु का रथ
- मोहनजोदडों से पत्थर की पुरोहित राजा की मूर्ति
- टेराकोटा की मातृदेवियों की मूर्तियाँ
- मुहरे वस्तुओं की गुणवत्ता एवं व्यक्ति की पहचान की द्योतक होती थी ।
- (I) मुहरों पर एकसिंगा (एकशृंगी - सबसे ज्यादा)
- मोहनजोदडों व हडप्पा से बडी मात्रा में मुहरें प्राप्त होती हैं ।
- (II) कूबड वाला सांड के चित्र

1. हडप्पाः -

पाकिस्तान के पंजाब के मोंटगोमरी जिले मे स्थित (अब - शाहीवाल जिले मे) रावी नदी के तट पर

- उत्खननकर्ता - दयाराम साहनी
- रावी नदी के तट पर श्रमिको के आवास एवं अन्नागार मिलते हैं ।
- R – 37 नामक कब्रिस्तान मिलता है । एक शव को ताबूत मे दफनाया गया है, इसे विदेशी की कब्र कहते है ।
- टीले पर निर्मित - व्हीलर ने ष्माउण्ट । दृ ठष कहा

2. मोहनजोदडो : -

स्थिति = लरकाना (सिन्ध, चझ)
सिन्धु नदी के तट पर
उत्खननकर्ता = राखालदास बनर्जी
मोहनजोदडो का शाब्दिक अर्थ = मृतकों का टीला (सिन्धी भाषा)

(i) विशाल स्नानागार -

(a) आकार :- 39×23×8 ft
(b) इसके उत्तर व दक्षिण मे सीढियाँ बनी हुई है
(c) इसमें बिटुमिनस का लेप किया गया है ।
(d) इसके उत्तर दिशा मे 6 वस्त्र बदलने के कक्ष हैं ।
(e) तीन तरफ बरामदे हैं ।
(f) बरामदे के पीछे कई कक्ष बने हुए हैं ।
(g) जलापूर्ति हेतु कुँआ भी बना हुआ है ।
(h) सीढियों के साक्ष्य भी मिलते हैं ।
(i) प्रथम तल पर सम्भवतया पुरोहित रहते होंगे
(j) सम्भवतया यहाँ धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता रहा होगा ?
(k) सर जॉन मार्शल ने इसे तात्कालिक समय की आश्चर्यजनक इमारत कहा है ।

(ii) विशाल अन्नागार
(iii) महाविद्यालय के साक्ष्य
(iv) सूती कपडे के साक्ष्य
(V) हाथी का कपालखण्ड
(vi) नर्तकी की मूर्ति जो धातु की बनी हुई है ।
(a) यह नग्न है ।
(b) इसने एक हाथ मे चूडियाँ पहन रखी है ।
(vii) पुरोहित राजा की मूर्ति जो ध्यान की अवस्था में है
(a) इसने शॉल ओढ रखी है जिस पर कशीदाकारी का कार्य किया गया है ।
(viii) यहाँ से मेसोपोटामिया की मुहर मिलती है ।

3. लोथल :-

स्थिति = गुजरात

- भोगवा नदी के किनारे
  उत्खननकर्ता = S. R. राव (रंगनाथ राव)

→ यह एक व्यापारिक नगर था ।

(i) यहाँ से गोदीवाडा (Dockyard) मिलता है
(a) यह सिन्धु घाटी सभ्यता की सबसे बडी कृति है ।
(ii) मनके (Bead) बनाने का कारखाना
(iii) चावल के साक्ष्य
(iv) फारस की मुहर जो गोलाकार बटननुमा है
(v) घोडे की मृण्मूर्तियाँ
(vi) चक्की के दो पाट

(vii) घरों के दरवाजे मुख्य मार्ग पर खुलते हैं (एकमात्र)
(viii) छोटे दिशा सूचक यंत्र

4. <u>सुरकोटडा / सुरकोटदा</u>: –
स्थिति = गुजरात
(प) घोडे की हड्डियाँ
- सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगो को घोडे का ज्ञान नहीं था ।

5. <u>रोजदी (गुजरात)</u>
- हाथी के साक्ष्य

6. <u>रोपड (PB)</u>
मनुष्य के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य

7. <u>धौलावीरा</u>
गुजरात – कच्छ जिला (किसी नदी तट पर नहीं)
उत्खननकर्त्ता – रविन्द्र सिंह विष्ट (1990 में)
- यह सबसे नवीन नगर है जिसका उत्खनन किया गया
- कृत्रिम जलाशय के साक्ष्य । संभवतः नहरों के माध्यम से खेती करते होंगे । (दुर्गाभाग, मध्यम नगर, निचला)
- यह नगर 3 भागों में बंटा हुआ था ।
- स्टेडियम एवं सूचना पट्ट के अवशेष मिलते है (खेल का मैदान)

8. <u>चन्हुदडों</u>
उत्खननकर्त्ता – एन. मजूमदार (डाकूओं ने हत्या कर दी) – अर्नेस्ट मैके
- मनके बनाने के कारखाने (मणिकारी), मुहर बनाने का काम आदि ।
- औद्योगिक नगर

10. <u>दैमाबाद</u>
- रथ मिले है ।

<u>हडप्पा लिपि</u>

- लगभग 64 मूल चिह्न व 400 तक अक्षर
- इन्हें लिपि का ज्ञान था
- दायीं से बायीं ओर लिखते थे ।
- गोमूत्राक्षर लिपि एवं भाव–चित्रात्मक लिपि थी ।
- 375 से 400 तक भाव एवं शब्दों का प्रयोग करते थे ।
- मछली का प्रयोग डंग तथा षष्ठ आकार भी अधिक

<u>पतन के कारण</u>

- गार्डन चाइल्ड तथा व्हीलर के अनुसार आर्यो का आक्रमण
- रंगनाथ राव तथा सर जॉन मार्शल – बाढ
- लोम्बिरिक–सिंधु नदी का मार्ग बदलता
- आरस्टाईन एवं अमलानंद घोष–जलवायु परिवर्तन

<u>वैदिक काल (साहित्य)</u>

1500 – 600 BC

1. वेद ⇒ श्रुति
2. ब्राह्मण ⇒
3. आरण्यक ⇒
4. उपनिषद ⇒ वेदान्त

} वैदिक साहित्य

(1) वेदांग
(2) धर्मशास्त्र
(3) महाकाव्य
(4) पुराण
(5) स्मृतियाँ

} वैदिक साहित्य का अंग नहीं है ।

<u>वेद –</u>

- वेद का शाब्दिक अर्थ ज्ञान होता है ।
- वेदों का संकलन कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने किया ।
- वेदों की रचना आर्यो ने की ।
- आर्य का शाब्दिक अर्थ = श्रेष्ठ/कुलीन
- वेदों का नित्य, प्रामाणिक एवं अपौरूषेय माना जाता है
- वैदिक मन्त्रों की रचना करने वाले ब्राह्मणों को दृष्टा कहते है ।
- वैदिक मन्त्रों की रचना करने वाली महिलाओं को ऋषि कहा जाता था ।
- वेद 4 है –

1. <u>ऋग्वेद</u> –

- ऋग्वेद में 10 मण्डल, 1028 सूक्त, 10580(10600) मन्त्र है ।
- पहला एवं 10वाँ मण्डल बाद में जोडे गए है ।
- दूसरे से लेकर सातवें मण्डल को वंश मण्डल /परिवार मण्डल कहा जाता है ।
- तीसरे मण्डल मे गायत्री मन्त्र का उल्लेख मिलता है ।
  - गायत्री मंत्र की रचना विश्वामित्र ने की ।
  - गायत्री मंत्र सवितृ / सावित्र (सूर्य) को समर्पित है ।
- सातवें मण्डल मे दशराज्ञ/ दशराजन युद्ध का उल्लेख मिलता है ।
  भरत कबीला V/S 10 कबीले
  राजा = सुदास
  पुरोहित = वशिष्ठ पुरोहित = विश्वामित्र
- यह युद्ध रावी नदी के जल के लिए लडा गया था ।

- आठवें मण्डल में घोसा, सिकता, अपाला, विश्वरा, काक्षावृति, लोपामुद्रा जैसी ऋषि महिलाओं के नाम मिलते है ।
- 9वां मण्डल सोम को समर्पित है ।
- सोम मुजवन्त पर्वत से मिलता है ।
- 10वें मण्डल के पुरूष सूक्त में शूद्र शब्द का उल्लेख / चारों वर्ण का उल्लेख मिलता है ।
- 10वें मण्डल के नासदीय सूक्त में निर्गुण भक्ति का उल्लेख मिलता है ।
- ऋग्वेद के मन्त्रों को उच्चारण करने वाला ब्राह्मण त्र होतृ
- उपवेद त्र आयुर्वेद

2. यजुर्वेद :-

- यह 2 भागों में है - (i) शुक्ल यजुर्वेद
  (ii) कृष्ण यजुर्वेद
- यह गद्य एवं पद्य दोनों में है ।
- इसमें शून्य का उल्लेख मिलता है ।
- मंत्र पढने वाले को ष्अध्वर्युष कहा जाता है ।
- यज्ञ - अनुष्ठानों की जानकारी मिलती है ।
- उपवेद - धनुर्वेद

3. सामवेद : -

- संगीत का प्राचीनतम स्त्रोत
- वैदिक मन्त्रों के उच्चारण को बताया गया है जो उच्च स्वर में गाए जाते है ।
- भगवान कृष्ण का प्रिय वेद
- मन्त्रों का उच्चारण करने वाला त्र उद्गाता
- उपवेद = गन्धर्ववेद

4. अथर्ववेद :-

- अथर्व ऋषि तथा आंगीरस ऋषि - रचयिता
- अन्य नाम - अथर्वआंगीरस वेद
- इसमें काले जादू, टोने - टोटको व चिकित्सा का उल्लेख ।
- चाँदी का उल्लेख
- विविध विषय - औषधि प्रयोग, शत्रुओं का दमन, रोग निवारण, तंत्र - मंत्र आदि ।
- मंत्रो का उच्चारण करने वाला - ब्रह्म
- उपवेद - शिल्पवेद ।

ब्राह्मण साहित्य

ऋग्वेद - 1. ऐतरेय ब्राह्मण
2. कोषीतकी (Raj. Board में इसे यजुर्वेद का ब्राह्मण)

यजुर्वेद - 1. शतपथ ब्राह्मण
2. तेतरेय ब्राह्मण

सामवेद - 1. पंचवीश ब्राह्मण
2. षडवीश ब्राह्मण
3. जैमिनीय ब्राह्मण

अथर्ववेद 1. गोपथ ब्राह्मण

आरण्यक साहित्य -

- वनों में रचना हुई
- रहस्यात्मक एवं दार्शनिक रूप (ज्ञान) में लिखे गये
- ज्ञान मार्ग प्रमुख

उपनिषद् साहित्य -

- इनकी संख्या 108 है ।
- इसे वेदान्त भी कहा जाता है ।
- उपनिषद् का शाब्दिक अर्थ गुरू के समीप निष्ठापूर्वक बैठना है ।
- विषयवस्तु - रहस्यात्मक ज्ञान व दार्शनिक तत्व

प्रमुख उपनिषद् –

1. **कठोपनिषद्** त्र कठ. उपनिषद् → इसमें यम व नचिकेता का संवाद है
   इसमे कर्मकाण्ड की आलोचना की गई है ।

2. **छान्दोग्य उपनिषद्** –
   - इसमें भगवान कृष्ण का प्राचीनतम उल्लेख मिलता है ।
   - भगवान श्रीकृष्ण को देवकी का पुत्र तथा अंगीरस ऋषि का शिष्य बताया है ।
   - बौद्ध धर्म का पंचशील सिद्धान्त इसमें मिलता है

3. **वृहदारण्यक उपनिषद्** –
   - सबसे लम्बा उपनिषद्
   - इसमें गार्गी व याज्ञवल्क्य का संवाद मिलता है

4. **मुण्डकोपनिषद्** –
   ष्सत्यमेव जयतेष

वेद — कर्म मार्ग – जेमिनि पूर्व मीमांसा दर्शन
ब्राह्मण — प्रभाकर व कुमारिल भट्ट

आरण्यक — ज्ञान मार्ग – बादरायण – उत्तर मीमांसा दर्शन
उपनिषद् ब्रह्मसूत्र

- शंकराचार्य – अद्वैत
- रामानुज – विशिष्ट अद्वैत
- निर्म्बाकाचार्य – द्वैत – अद्वैत
- वल्लभाचार्य – शुद्ध अद्वैत
- माध्वाचार्य – द्वैत

वेदांग

1. शिक्षा
2. ज्योतिष
3. व्याकरण
4. छन्द
5. निरूक्त
6. कल्प

पुराण – संख्या – 18
ऋषि लोमहर्ष एवं इनके पुत्र उग्रश्रवा ने संकलित किया
- मत्स्य पुराण – सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक इसमें सातवाहन शासकों का उल्लेख, शुंगवंश का उल्लेख
- विष्णु पुराण – मौर्य वंश का उल्लेख
- वायु पुराण – गुप्त वंश का उल्लेख
- मार्कण्डेय पुराण – देवी महात्मय – (इसका भाग दुर्गासप्तशती) महामृत्युंजय मंत्र

स्मृति साहित्यः –

मनुस्मृतिः – प्राचीनतम स्मृति
- इसमें सामाजिक नियमों का उल्लेख किया गया है
- जर्मन दार्शनिक नीत्शे कहता है ।ष्बाइबिल को जला दो, मनुस्मृति को अपनाओष
- टीकाकार त्र भारूची
  कुल्लक भट्ट
  मेधातिथी
  गोविन्दराज

याज्ञवल्क्य स्मृतिः – टीकाकार = विश्वरूप
विज्ञानेश्वर
अपरार्क

नारदस्मृतिः – इसमें दासों की मुक्ति का उल्लेख किया गया है ।
कात्यायनः – इसमें आर्थिक गतिविधियों का उल्लेख है ।

ऋग्वैदिक काल	उत्तरवैदिक काल
(1500 – 1000BC)	(1000 – 600BC)

ऋग्वैदिक काल (1500 – 1000 BC)

- आर्य का शाब्दिक अर्थ – भद्रजन, श्रेष्ठ, उत्तम, कुलीन
- आर्यो का निवास स्थान –
  (i) बाल गंगाधर तिलक – "आर्कटिक होम ऑफ वेदाज" ← पुस्तके
  "गीता रहस्य" ← पुस्तके
  आर्यिऑन / ओर्योन ← पुस्तके
  इस पुस्तक मे उत्तरी ध्रुव को आर्यो का निवास स्थान बताया ।
  (ii) दयानन्द सरस्वती – तिब्बत को आर्यो का स्थान बताया ।
  (iii) डॉ. पेन्का – जर्मनी को बताया ।
  (iv) मेक्स म्युलर – मध्य एशिया – बैक्ट्रिया
  सर्वाधिक मान्य मत

आर्यो का भौगोलिक विस्तार :–

- ऋग्वेद में सबसे ज्यादा सिन्धु नदी का उल्लेख मिलता है ।
- सरस्वती सबसे पवित्र नदी थी । (देवीतमा, मातेतमा, नदीतमा)
- गंगा व सरयू का उल्लेख 1 – 1 बार ष्मुजवन्तष

- यमुना का उल्लेख 3 बार
- ष्भुजवन्तष नामक पहाडी चोटी का उल्लेख – जो कि हिमालय है ।
- सोम का निवास स्थान – भुजवन्त
  झेलम – वितस्ता, चिनाब – असिक्नी, सतलज सुतुद्री, व्यास – बिपाशा, रावी – पुरूषणी

आर्यो की राजनैतिक स्थिति :–

- राजा का पद वंशानुगत नहीं होता था ।
- राजा को गोप / जनस्य गोप कहा जाता था ।
- राजा का पद गरिमामयी नहीं होता था ।
- कालान्तर (ऋग्वैदिक काल का अन्तिम समय) में गोप का पद वंशानुगत हो गया था ।
- राजा की सहायता हेतु कुछ संस्थाएँ होती थी –

(1) विदथ –
- प्राचीनतम संस्था
- यह धन का बँटवारा करती थी (लूट)

(2) सभा –
- वरिष्ठ एवं कुलीन लोगों का समूह
- ऋग्वेद मे 8 बार इसका उल्लेख किया गया है

(3) समिति –
- जनप्रतिनिधियों का समूह
- ऋग्वेद में 9 बार इसका उल्लेख किया है ।
- स्पश त्र गुप्तचर
- राजा की सहायता हेतु 12 मन्त्री होते थे जिन्हे रत्निन (रत्नि) कहा जाता था ।
- ब्राजपतिः – गोचर भूमि का प्रमुख
- बलिः – राजा को दिया जाने वाला स्वैच्छिक कर

आर्थिक जीवन –

- आय का स्त्रोत/ प्रमुख पेशा – पशुपालन
- गाय व घोडा – प्रिय पशु
- कृषि (स्थायी कृषि) नहीं करते थे । ऋग्वेद मे कृषि का उल्लेख 3 बार मिलता है ।
- मुद्रा प्रणाली नहीं । वस्तु विनिमय के माध्यम से व्यापार
- मुद्रा के रूप मे गाय व निश्क का प्रयोग । (प्रारम्भ मे आभूषण)
- अयस शब्द – संभवतः ताँबे या काँसे के लिए / लोहे से परिचित नहीं

सामाजिक जीवन

- पितृसतात्मक संयुक्त परिवार
- समाज 3 वर्णो मे विभक्त – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य
- शुद्रो का अस्तित्व नहीं था ।
- ऋग्वेद के 10वें मण्डल मे पुरूष सूक्त में क्षुद्र शब्द का उल्लेख । लेकिन यह बाद में जोडा गया था ।
- वर्ण व्यवस्था – कर्म आधारित अर्थात् व्यक्ति वर्ण बदल सकता था ।
- महिलाओं को सभा व समिति मे हिस्सा लेने का अधिकार था ।
- महिलाओ को शिक्षा का अधिकार था ।
- कुछ विदुषी महिलाओं की जानकारी
  लोपामुद्रा, घोषा, सिकता, अपाला, विश्वरा, काक्षावृति
- ष्विषफलाष नामक योद्धा महिला का उल्लेख ।
- जो महिलाएँ अविवाहित होकर अध्ययन करती थी, उन्हे ष्अमाजुष कहा जाता था ।
- बहुपत्नी प्रथा का प्रचलन ।
- विधवा विवाह होता था ।
- सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह का प्रचलन नहीं था ।
- ष्नियोग प्रथाष का प्रचलन था ।
- दहेज को ष्वस्तुष कहते थे ।
- विराट पुरूष के मुख से ब्राह्मण, क्षत्रिय भुजाओ से, वैश्य जाँघो से एवं शुद्र पैरों से उत्पन्न हुए है ।
- आर्यो के वस्त्र सूत, ऊन एवं चर्म के बने होते है ।
- भिष्ज शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में वैद्य के लिए होता था ।

धार्मिक जीवन :–

- आर्य बहुदेववाद मे आस्था रखते थे । सर्वेश्वरवाद में भी आस्था रखते थे ।
- मूर्तिपूजा नहीं करते थे ।
- मन्दिरों के साक्ष्य नहीं मिलते है ।
- सबसे प्रमुख देवता – इन्द्र
  ऋग्वेद मे 250 बार 'इन्द्र' का उल्लेख है । इन्द्र को ष्पुरन्दरष कहा ।
- 'अग्नि' दूसरा प्रमुख माना जाता था ।
- अग्नि को मध्यस्थ माना जाता था ।
- वरूण – तीसरा प्रमुख देवता । वरूण को 'ऋत' का संरक्षक माना जाता है ।
  ऋत – इस जगत् की भौतिक, नैतिक एवं कर्मकाण्डीय व्यवस्था को ऋत कहा गया है ।

- पुषन – पशुओं के देवता को कहा जाता था । (पूषण)
- यज्ञ अनुष्ठान होते थे ।
- धार्मिक कर्मकाण्डो का उद्देश्य भौतिक सुखों (पुत्र/पशु) की प्राप्ति करना था ।
- गायत्री मंत्र ऋग्वेद के तीसरे मंडल में उल्लेख
- सोम का पेय पदार्थ को देवता माना । ऋग्वेद के 9वें मण्डल में ।

उत्तरवैदिक काल – 1000 – 600 BC

- महत्त्वपूर्ण स्त्रोत – यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण, उपनिषद् व आरण्यक
- आर्य संस्कृति के प्रसार और विकास, उत्कर्ष, विभिन्नीकरण का युग
- लौह प्रौद्योगिकी युग की शुरूआत । (ष्चित्रित धूसर मृदभाण्डष)

राजनैतिक जीवन – राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था :-

- राजा का पद वंशानुगत हो गया था ।
- ऐतरेय ब्राह्मण मे राजा की विभिन्न उपाधियों का वर्णन मिलता है ।
  स्वराट, विराट, एकराट, सम्राट
- राजा की सहायता हेतु 12 रत्निन् होते थे ।
- राजा यज्ञों का आयोजन करवाता था ।

(i) अश्वमेध यज्ञ – यह साम्राज्यवादी यज्ञ होता था । 3 दिन तक होता

(ii) राजसूय यज्ञ – राज्याभिषेक के समय किया जाता था इस दिन राजा हल चलाता था । अपने रत्निनों का निमंत्रण स्वीकार कर, उनके घर भोजन करने जाता था ।

(iii) वाजपेयी यज्ञ – रथ दौड का आयोजन करवाते थे राजा हिस्सा लेता था व हमेशा जीतता था ।

- राजा के पास स्थायी सेना नहीं होती थी ।
- ऋग्वैदिक काल मे राजा को दिया जाने वाला स्वैच्छिक कर, अब अनिवार्य हो गया, जिसे 'बली' कहा जाता था ।(1/16वाँ भाग)
- विदथ का उल्लेख नहीं मिलता ।
- सभा, एवं समिति का प्रभाव कम हो गया था ।
- अथर्ववेद – सभा व समिति को प्रजापति की पुत्रियाँ कहा गया है ।
- राजा की ष्दैवीय उत्पति का सिद्धान्तष सर्वप्रथम ऐतरेय ब्राह्मण मे मिलता है ।

आर्थिक जीवन :-

- कृषि का विकास हो चुका था ।
- अथर्ववेद मे ष्पृथवेन्युष को कृषि धरती पर लाने का श्रेय जाता है ।
- अथर्ववेद मे टिडियों का उल्लेख मिलता है ।
- शतपथ ब्राह्मण में कृषि के सभी प्रकारों (जुताई,बुआई,कटाई) का उल्लेख मिलता है ।
- शतपथ ब्राह्मण की काठक संहिता मे (24 बैलों द्वारा खिंचे जाने वाले) हल का वर्णन मिलता है ।
- गेहूँ एवं जौ प्रमुख फसले थी ।
- पशुपालन भी होता था ।
- वस्तु विनिमय होता था ।
- विनिमय मे गाय व निस्क का प्रयोग होता था ।
  निस्क – सोने का आभूषण जो गले मे पहनते थे
- अधिशेष उत्पादन होने लगा । (लौहा – खेत)
- अन्न उत्पादक वर्ग – ब्राह्मण व क्षत्रिय

उत्पादक वर्ग – वैश्य व शुद्र :-

- अधिशेष उत्पादन पर अधिकार को लेकर ब्राह्मणों व क्षत्रियों मे संघर्ष हुआ । अंततः ब्राह्मणों को प्रतीकात्मक श्रेष्ठता प्रदान की गयी एवं अधिशेष उत्पादन पर क्षत्रियों का अधिकार हो गया ।
- कृषि मे लौह निर्मित उपकरणों का प्रयोग (अन्तरजीखेडा से साक्ष्य)
- समुद्र का ज्ञान हो गया था । साहित्य मे पश्चिमी तथा पूर्वी दोनो प्रकार के समुद्रों को वर्णन मिलता है ।व्यापार व वाणिज्य का संकेत
- वस्त्र निर्माण और धातु शिल्प (धातु गलाने का काम) उद्योग बडे पैमाने पर ।

सामाजिक जीवन :-

- पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार
- चार वर्णों मे समाज विभक्त हो गया था । किन्तु अस्पृश्यता का अभाव था ।
- ब्राह्मणों को 'अदायी' कहा जाता था ।
  आरम्भ के 3 वर्ग द्विज कहलाते थे ।
  (जनेऊ धारण करते है) उपनयन संस्कार होता था ।
  द्विज – दो बार जन्म लेने वाला
- क्षुद्रो को उपनयन संस्कार का अधिकार नहीं था ।
- महिलाओं की स्थिति मे गिरावट आयी ।
  (वृहदारण्य उपनिषद मे याज्ञवल्क्य एवं गार्गी का संवाद मिलता है ।)
- अथर्ववेद मे पुत्री जन्म को दुःखदायी बताया है ।

- ऐतरेय ब्राह्मण में भी पुत्री जन्म को दुःखदायी बताया है । (पुत्री - कृपण कहा)
- मैत्रायणी संहिता मे भी पुत्री को शराब एवं जुआ की तरह बुराई बताया है ।
- महिलाओ को शिक्षा का अधिकार था । म्ह दृ गार्गी, मैत्रेयी, वेदवती
- सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा का प्रचलन नही था ।

धार्मिक स्थिति

- बहुदेववाद का प्रचलन था । सर्वेश्वर वाद मे भी विश्वास रखते थे ।
- मन्दिरों के साक्ष्य नही
- यज्ञ अनुष्ठान अत्यधिक जटिल हो गये थे केवल विद्वान ब्राह्मण एवं क्षत्रिय ही यज्ञ कर सकते थे ।
- प्रमुख देवता - ब्रह्मा, विष्णु, महेश ।
  पाँच प्रकार के यज्ञ होते थे (पंचयज्ञ)।
  (i) ब्रह्म यज्ञ
  (ii) देव यज्ञ
  (iii) अतिथि यज्ञ
  (iv) पितृ यज्ञ
  (v) भूत यज्ञ

- ब्रह्म यज्ञ को ''ऋषि यज्ञ'', अतिथि यज्ञ को ''मनुष्य यज्ञ'' भी कहते थे । (भूत यज्ञ - प्राणी जगत् व प्रकृति के प्रति कृतज्ञता)

3 ऋण -
(i) ऋषि ऋण
(ii) देव ऋण
(iii) पितृ ऋण
- ब्राह्मणों के एक वर्ग ने इस जटिल कर्मकाण्डिय व्यवस्था का विरोध - किया एवं ज्ञान पर विशेष बल दिया ।

बौद्ध धर्म

संस्थापक - गौतम बुद्ध
जन्म - 563 ठ ब्
पिता - शुद्धोधन
माता - महामाया
मौसी - प्रजापति गौतमी
पत्नी - यशोधरा
पुत्र - राहुल
जन्मस्थान - लुम्बिनी (कपिलवस्तु)
आधुनिक - रूम्मिन देई, नेपाल
वंश - इक्ष्वाकु
शाक्य क्षत्रिय
गौत्र - गौतम

- कौण्डिनय ब्राह्मण ने भविष्यवाणी की कि सिद्धार्थ बडा होकर चक्रवर्ती सम्राट या साधु बनेगा ।
- 4 घटनाएँ जिन्होने बुद्ध का जीवन बदल दिया -
  (प) वृद्ध व्यक्ति
  (पप) बीमार व्यक्ति
  (पपप) मृत व्यक्ति
  (पअ) सन्यासी
- 29 वर्ष की अवस्था मे गृहत्याग किया यह घटना -- ''महाभिनिष्क्रमण'' कहलाती है ।
- 'आलार कलाम' के आश्रम मे रहकर सांख्य दर्शन का ज्ञान प्राप्त किया ।
- ''रामपुत्र' - दूसरे गुरू । (रूद्रक रामपुत्र)
- कौडिन्य आदि ब्राह्मणों के साथ कठिन तपस्या की ।
- ''सुजाता'' नामक लडकी ने बुद्ध को खीर खिलाई ।
- बुद्ध ने ''मध्यम मार्ग'' का प्रतिपादन किया ।
- बुद्ध उरूवेला चले गये एवं वहाँ निरंजना नदी के तट पर पीपल वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई ।
- अब सिद्धार्थ ''गौतम बुद्ध व शाक्य मुनि'' के नाम से प्रसिद्ध हुये ।
- सारनाथ में कौडिन्य एवं अन्य ब्राह्मणों को पहला उपदेश दिया इसे ''धर्मचक्र प्रवर्तन'' कहते है
- सर्वाधिक उपदेश - श्रावस्ती मे दिये ।
- आनन्द प्रिय शिष्य तथा उपालि प्रमुख शिष्य था ।
- आानन्द के कहने पर भगवान बुद्ध ने महिलाओं को संघ मे प्रवेश दिया । प्रजापति गौतमी - पहली 'भिक्षुणी'
- 483 ठण्ब् मे बुद्ध की मृत्यु - खुशीनारा में (कुशीनारा) कुशीनगर
- भगवान बुद्ध के प्रतीक -
  1. हाथी/ सफेद हाथी - भगवान बुद्ध के गर्भस्थ होने का प्रतीक
  2. सांड/कमल - जन्म
  3. घोडा - गृहत्याग का प्रतीक
  4. बोधिवृक्ष/पीपल - ज्ञान का प्रतीक
  5. पद्चिन्ह - निर्वाण का प्रतीक
  6. स्तूप - मृत्यु का प्रतीक
  7. महाभिनिष्क्रमण - 29 वर्ष की अवस्था में भगवान बुद्ध ने गृहत्याग किया

8. सम्बोधि – 35 वर्ष की अवस्था मे गौतम बुद्ध को बोधगया मे निरंजना नदी के तट पर पीपल के वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई ।

<u>ज्ञान/ दर्शन</u> –

4 आर्य सत्य

(i) दुःख है ।
(ii) दुःख का कारण है । (प्रतीत्य समुत्पाद)
(iii) दुःख निवारण है ।
(iv) दुःख निवारण का मार्ग है ।

➢ <u>अष्टांगिक मार्ग</u> –

सम्यक् दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक्, सम्यक कर्मान्त, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति, सम्यक् समाधि

➢ <u>कार्य कारण/ कारणता सिद्धान्त – प्रतीत्य समुत्पाद</u> :–

(ऐसा होने पर –वैसा होना)

- दुःखो का कारण अविद्या को बताया है ।
- कर्म सिद्धान्त मे विश्वास रखते है ।
- पुनर्जन्म मे विश्वास रखते है ।
- अनात्मवादी होते है । आत्म की अमरता में विश्वास नहीं रखते है ।
- अनीश्वरवादी होते है । ईश्वर के प्रश्न पर बुद्ध मुस्करा देते थे ।
- क्षणिकवाद (अनित्यवादी) – इस जगत की सभी वस्तुऐं अनित्य एवं परिवर्तनशील है ।
- आम्रपाली (वैशाली) भी बौद्ध संघ मे सम्मिलित हो गयी थी ।

<u>अनात्मवाद</u> –

- भगवान बुद्ध नित्य आत्मा को स्वीकार नहीं करते
- बुद्ध के अनुसार –
  षविज्ञानों (विचार) का प्रवाह ही आत्मा है ।ष
- यह विज्ञान अनित्य/क्षणिक होते है ।
- प्रत्येक विज्ञान मरने से पूर्व नए विज्ञान को जन्म देता है ।
- विज्ञानों का पुनर्जन्म होता है ।

<u>निर्वाण</u> –

- निर्वाण का शाब्दिक अर्थ ष्दीपक/विज्ञान का बुझ जानाष होता है ।
- निर्वाण बौद्ध धर्म का अन्तिम लक्ष्य है ।
- भगवान बुद्ध ने निर्वाण की अवस्था का उल्लेख नहीं किया है ।
- भगवान बुद्ध ईश्वर, परमतत्व, निर्वाण जैसे प्रश्नों का उत्तर नहीं देते थे एवं मुस्कुरा दिया करते थे ।
- बौद्ध धर्म अनीश्वरवादी धर्म है ।
- बौद्ध धर्म कर्मफलवादी सिद्धान्त एवं पुनर्जन्म को मानता है ।
- भगवान बुद्ध अज्ञेयवादी नहीं थे ।

❖ <u>बौद्ध धर्म की चार संगीति</u> –

क्रमांक	समय	स्थान	शासक	अध्यक्ष
1.	483 B. C.	राजगृह	अजातशत्रु	महाकश्यप
2.	383 B. C.	वैशाली	कालाशोक	साबकमीर
3.	251 B. C.	पाटलीपुत्र	अशोक	मोग्गलीपुत तिस्स
4.	1st Cent.	कुण्डलवन (कश्मीर)	कनिष्क	अश्वघोष / वसुमित्र

(1) <u>प्रथम संगीति</u> – दो पुस्तके (ग्रन्थ) लिखी गई

(i) सुत पिटकः – भगवान बुद्ध का जीवन, उपदेश, शिक्षाएँ, तथा बौद्ध धर्म की जानकारी मिलती है। इसके खुद्दक निकाय में बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाएँ (जातक) मिलती है ।

(ii) विनय पिटक – संघ के नियम तथा बौद्ध भिक्षुओ के आचार विचार (आचरण) का वर्णन मिलता है

(2) <u>द्वितीय संगीति</u> – बौद्ध धर्म 2 भागों मे विभक्त हो गया ।

- स्थविर तथा महासंघिक – दो भागों मे विभक्त

(3) <u>तृतीय संगीति</u> – इसमे तीसरे पिटक – अभिधम्म पिटक की रचना की गई । इसमे ''बौद्ध धर्म के दर्शन'' का वर्णन है संयुक्त रूप से सुत – विनय – अभिधम्म पिटक को ''त्रिपिटक'' कहा जाता है

(4) <u>चतुर्थ संगीति</u> – बौद्ध धर्म 2 भागों मे विभक्त

हीनयान	महायान
1. रूढीवादी	1. सुधारवादी
2. बुद्ध को महापुरूष मानते है ।	2. भगवान बुद्ध को ईश्वर मानते है ।
3. देवी-देवताओं को नहीं मानते	3. देवी-देवताओं को मानते है । जैसे- प्रजा की देवी - तारा
4. मूर्तिपूजा नहीं करते ।	4. मूर्तिपूजा करते है
5. परमपद - अर्हत	5. परमपद - बोधिसत्व
6. व्यक्तिवादी	6. मनवतावादी
7. भाषा - पालि	7. भाषा - संस्कृत
8. श्रीलंका, बर्मा, म्यांमार, थायलैण्ड, कम्बोडिया, लाओस व वियतनाम	8. नेपाल, चीन, कोरिया, जापान

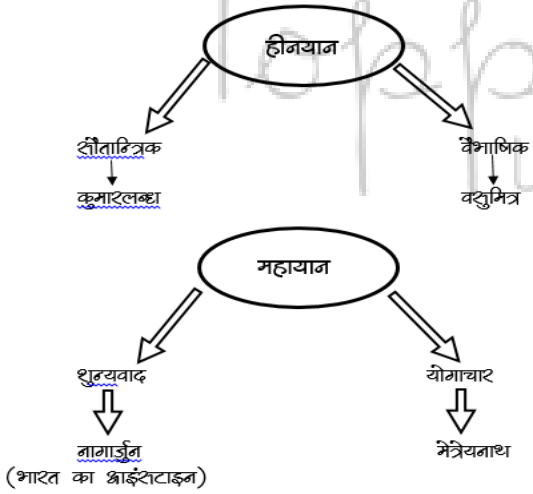

- अन्तिम लक्ष्य - निर्वाण त्र (अर्थ - बुझ जाना)
- मैत्रेय - भविष्य का बुद्ध

➢ बौद्ध धर्म का योगदान: -

- भगवान बुद्ध ने एक सरल एवं आडम्बरविहीन धर्म दिया ।
- भगवान बुद्ध ने धार्मिक आडम्बरो, कर्मकाण्ड, अन्धविश्वास, सामाजिक असमानता, वर्ण व्यवस्था का विरोध किया ।
- भगवान बुद्ध ने नैतिक नियमों पर अत्यधिक बल दिया ।
  e. g. सत्य, अहिंसा
- बुद्ध ने पंचशील का सिद्धान्त दिया -
  (i) झूठ नही बोलना
  (ii) चोरी नहीं करना
  (iii) हिंसा नही करना
  (iv) नशा नहीं करना
  (v) व्यभिचार नही करना

स्थापत्य कला मे योगदान -

- बौद्ध धर्म ने स्थापत्य कला मे योगदान दिया ।
- चैत्य (कार्ले, अजन्ता)
- विहार (बोधगया, सारनाथ)
- स्तूप (धमेख, साँची)

बौद्ध धर्म के पतन के कारण : -

1. बौद्ध धर्म (संघ) अनेकानेक शाखाओं मे विभाजित हो गया एवं उनमे आपसी फूट पड गई ।
2. बौद्ध संघ धन का केन्द्र बन गए जिससे सन्तों के जीवन मे नैतिक पतन हुआ ।
3. कालान्तर मे बौद्ध धर्म मे कालचक्रयान व वज्रयान जैसी शाखाओं का उद्भव हुआ ।
   यह अतिवादी शाखाएँ थी जो जादू, टोने - टोटके, माँस - मदिरा व मैथुन मे विश्वास करते थे ।
4. बौद्ध धर्म ने हिन्दू कुप्रथाओं को अपना लिया ।

जैन धर्म

- संस्थापक - ऋषभदेव / आदिनाथ दोनों का वर्णन ऋग्वेद मे
- 21वें तीर्थकर - नेमीनाथ
- 22वें तीर्थकर - अरिष्टनेमी - (कृष्ण के समकालीन)
- 23वें तीर्थकर - पार्श्वनाथ
- ऐतिहासिक स्त्रोतों से जानकारी मिलती है ।
- पिता - अश्वसेन
- जन्मस्थान - बनारस
- सम्मेद पर्वत पर ज्ञान प्राप्ति हुई ।
- चार व्रत दिये ।
  (i) सत्य
  (ii) अहिंसा
  (iii) अस्तेय (चोरी न करना)
  (iv) अपरिग्रह (धन इकट्ठा न करना)
  (v) ब्रह्मचर्य (ये महावीर स्वामी ने दिया)

- महावीर स्वामी (24वें)
  - जन्म – 540 ठण ब्ब   भाई – नन्दीबर्मन
  - स्थान – कुण्डग्राम
  - मृत्यु – पावापुरी (बिहार)
  - बचपन का नाम – वर्धमान
  - पिता – सिद्धार्थ
  - माता – त्रिशला
  - पत्नी – यशोदा
  - पुत्री – प्रियदर्शना   दामाद – जामालि
- 30 वर्ष में गृहत्याग । वर्धमान ने रथ पर सवार होकर गाजे बाजे सहित घर छोडा ।
- 13 माह पश्चात् वस्त्र त्याग भद्रबाहु की पुस्तक कल्प सूत्र से जानकारी मिलती है
- 12 वर्ष की तपस्या के पश्चात् ज्ञान प्राप्ति ।
- जुम्बिकाग्राम मे रिजुपालिका/ऋजुपालिका नदी के किनारे पर साल वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति
- प्रथम शिष्य – जामालि ।
- जमालि ने ही प्रथम विद्रोह किया ।
- आरम्भिक 11 शिष्यों को "गणधर" कहा जाता है ।
- ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् महावीर व जिन (विजेता) कहलाये ।
- इन्होने त्रिरत्न की अवधारणा दी
  (i) सम्यक् ज्ञान
  (ii) सम्यक् दर्शन
  (iii) सम्यक् चरित्र

- पंचव्रत – महाव्रत (भिक्षुओं के लिए)
  अणुव्रत (गृहस्थों के लिए)

- ज्ञान के 5 प्रकार बताये ।
  (i) मति – पशुओं को भी यह ज्ञान होता है । इन्द्रियों जनित ज्ञान
  (ii) श्रुति ज्ञान – श्रवण ज्ञान
  (iii) अवधि ज्ञान – दिव्य ज्ञान
  (iv) मनः पर्यय ज्ञान – दूसरे के मन को जान लेना
  (v) कैवल्य ज्ञान – सर्वोच्च ज्ञान ।

- कर्म सिद्धान्त (कर्म फल) तथा पुनर्जन्म में विश्वास रखते है ।
- आत्मा को जीव कहते है ।
- आस्रव – पृद्गलो का जीव की तरफ प्रवाहित होना ।
- संवर – जीव की तरफ पृद्गलो के होने वाले प्रवाह का रूक जाना ।
- निर्जरा – जीव से चिपके हुए पृद्गलों का झड जाना

<u>त्रिरत्न</u> – सम्यक् ज्ञान, सम्यक दर्शन, सम्यक चरित्र

<u>अनेकान्तवाद</u> :-

- यह जैन दर्शन का तत्वमीमांसीय सिद्धान्त है ।
- इस जगत में अनेक वस्तुएँ है एवं प्रत्येक वस्तु में अनेक गुण है ।

<u>स्यादवाद</u> :-
- यह जैन दर्शन का ज्ञान मीमांसीय सिद्धान्त है ।
- जैन दर्शन के अनुसार इस जगत में अनेक वस्तुएँ है एवं प्रत्येक वस्तु में अनेक गुण है ।
- हमारी बुद्धि न तो जगत की सभी वस्तुओं को पहचान सकती है एवं न ही एक वस्तु के सभी गुणों को पहचान सकती है, यह बुद्धि की सापेक्षता का सिद्धान्त है ।
- जैन धर्म में इसे सात जन्मान्ध के उदाहरण द्वारा समझाया गया है ।

<u>जैन संगीति</u> :-

समय   298 BC
शासक   चन्द्रगुप्त मौर्य
स्थान   पाटलिपुत्र
अध्यक्ष   स्थलबाहु व भद्रबाहु (स्थूलभद्र
- जैन धम्र दो भागों में विभक्त हो गया ।
- स्थलबाहु के अनुयायी-श्वेताम्बर (तेरापंथी)
- भद्रबाहु के अनुयायी – दिगम्बर (समैया)

1. 512 ई. वल्लभी (गुजरात)   देवार्धि क्षमा श्रमण

प्रथम संगीति :-

– जैन धर्म दो शाखाओं में विभाजित हो गया –

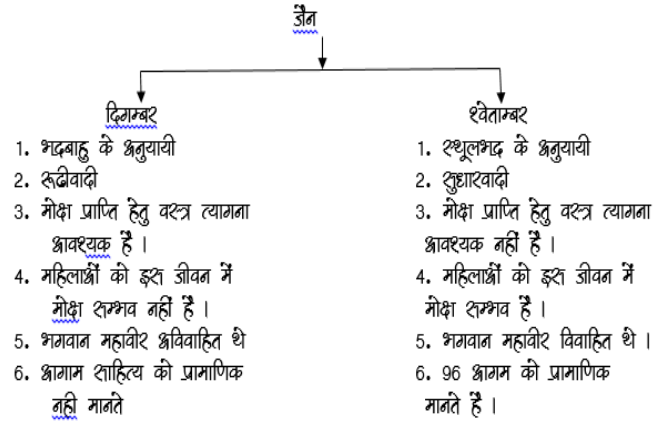

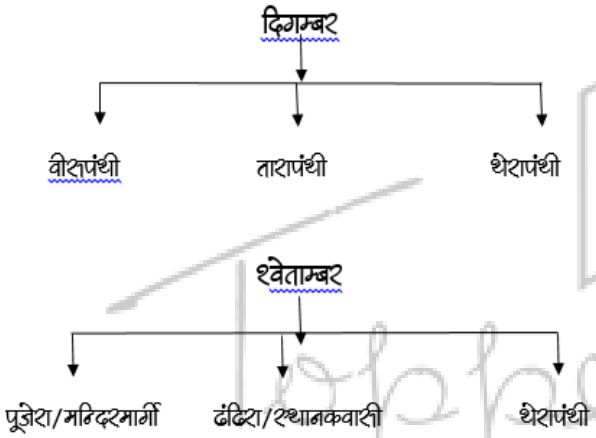

द्वितीय बौद्ध संगीति :-

– आगम साहित्य का संकलन किया गया।

जैन धर्म का योगदान :-

- जैनों एक सरल एवं आडम्बरविहीन धर्म दिया।
- जैनों ने धार्मिक आडम्बरों, कर्मकाण्ड, अन्धविश्वासों, वर्ण व्यवस्था आदि का विरोध किया।
- जैनों ने नैतिक मूल्यों पर अत्यधिक बल दिया। जैसे – सत्य, अहिंसा

पतन के कारण :-

I. आत्मापीडन, कठोर व्रत व तपस्या पर बल

II. अंहिसा पर अत्यधिक बल के कारण लोग नियम धारण नहीं कर पाते।

III. अत्यधिक कलिष्टता (स्याद्वाद, अनेकांतवाद, द्वैतवादी तत्वज्ञान आदि को समझना जन साधारण के लिए कठिन) परिणामस्वरूप जैन धर्म तपस्वियों तक ही सीमित रहा।

IV. जैन मतावालम्बियों में आंतरिक मतभेद–श्वेताम्बर व दिगम्बर

संथारा प्रथा :-

जब किसी व्यक्ति को लगता है कि वो मृत्यु के निकट है तो वह एकांतवास धारण कर लेता है और अन्न जल त्याग देता है। मौन व्रत धारण कर लेता है तथा अन्त में देहत्याग देता है।

आजीवक सम्प्रदाय

- संस्थापक – मक्खली पुत्र गोशाल
- भाग्यवादी थे।

जैन व बौद्ध धर्म में समानताएँ :-

- दोनों अनीश्वरवादी दर्शन है।
- दोनों नास्तिक दर्शन है।
- वेदों को स्वीकार नहीं करते है।
- दोनों कर्मफल सिद्धान्त एवं पुनर्जन्म को मानते है।
- दोनों धार्मिक आडम्बरों एवं सामाजिक असमानताओं का विरोध करते है।
- दोनो के संस्थापक क्षत्रिय राजकुमार थे।
- दोनों ने आर्थिक सुधार किए।
- दोनों ने नैतिक मूल्यों पर अत्यधिक बल दिया।

भागवत धर्म :-

– इसकी स्थापना भगवान कृष्ण ने की।

– इसे वैष्णव धर्म भी कहा जाता है।

– छांदोग्य उपनिषद् में कृष्ण का पहला उल्लेख मिलता है।

– कृष्ण को "वृष्णि वंश" का देवकी का पुत्र व अंगीरस का शिष्य बताया है।

– ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार कृष्ण ही नारायण है।

– नारायण के अनुयायियों को पांचरात्रिक एवं धर्म को पांचरात्र कहा जाता है।

– मत्स्यपुराण में विष्णु के दशावतारों का उल्लेख मिलता है।

– 8 वाँ अवतार बलराम है

– 9 वाँ अवतार बुद्ध है।

– 10 वाँ अवतार "कल्कि" होगा।

– विष्णु का पहला उल्लेख "ऋग्वेद" में मिलता है

– कृष्ण को "चतुर्व्यूह" (साम्ब, अनिरूद्ध, प्रद्युम्न, संकर्षन) के साथ में पूजा जाता है ।

पांचरात्र प्रमुख :-

1. कृष्ण
2. लक्ष्मी
3. अनिरूद्ध
4. प्रद्युम्न
5. संकर्षन

– भागवत धर्म को दक्षिण भारत में "आलवार" कहा जाता है ।

शैव धर्म :-

– इसका विकास शुंग एवं सातवाहन वंश के समय हुआ
– रेनीगुंटा (मुद्रास) से गुडिमल्लन लिंग प्राप्त होता है
– यह शिव की प्राचीनतम मूर्ति है ।

शैव धर्म में कई सम्प्रदाय है :-

1. पाशुपत सम्प्रदाय :-

- प्राचीनतम सम्प्रदाय
- संस्थापक – लकुलिश
- ग्रन्थ– पाशुपत सूत्र
- इसके अनुयायियों को पंचार्थिक कहा जाता है ।

2. कापलिक सम्प्रदाय :-

- यह भैरव को पूजते है ।
- यह अतिवादी है ।

3. लिंगायत :-

- इसका विस्तार कर्नाटक में हुआ ।
- संस्थापक – ऋषि अल्लभ एवं बसव

शाक्त धर्म :-

– यह देवी को शक्ति के रूप में पूजते है ।
– शक्ति का प्रमुख मन्दिर कामाख्या (असम) में है
– कश्मीर में देवी के सौम्य रूप "शारदा देवी" को पूजा जाता है
– यह मन्दिर वैष्णोदेवी के नाम से प्रसिद्ध है ।

आजीवक सम्प्रदाय :-

– संस्थापक – मक्खली पुत्त गौशाल
– यह भगवान महावीर के समकालीन थे ।
– महावीर के साथ तपस्या की थी ।
– यह भाग्यवादी होते है ।
– मौर्य शासक बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था ।

16 महाजनपद काल

- भारतीय इतिहास की दूसरी नगरीय सभ्यता ।
- 16 महाजनपदों का उल्लेख बौद्धों के "अंगुतर निकायष एवं जैनों के भगवती सूत्र" से मिलता है

*मल्ल संघ एवं वज्जी संघ में गणतंत्र था ।

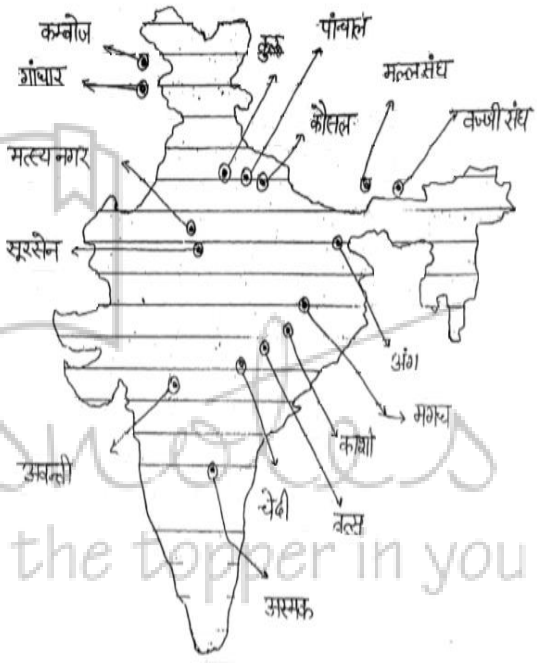

– आर्य जातियों का परस्पर विलीयकरण से जनपदों का विस्तार हुआ और महाजनपद बनें । कलाकौशल की अभूतपूर्व वृद्धि, धन धान्य, व्यापार वाणिज्य में उत्कर्ष
– लोहे का प्रयोग, कृषि–अधिशेष उत्पादन, व्यापार वाणिज्य, क्षत्रिय–हथियार

राज्य	राजधानी
1. कम्बोज	हाटक
2. गांधार	तक्षशिला
3. कुरू	इन्द्रप्रस्थ
4. पांचाल	अहिच्छत्रपुर
5. कौशल	श्रावस्ती (साकेत)
6. मल्ल संघ	कुशीनारा
7. वज्जी संघ	विदेह/वैशाली
8. अंग	चम्पा
9. मगध	राजगृह, गिरीव्रज, पाटलीपुत्र
10.काशी	बनारस /वाराणसी
11.वत्स	कौशाम्बी
12.चेदी	शुक्तिमती
13.अश्मक	पोटली
14.अवन्ती	महिष्मती/मायुष्मती, उज्जैयनी (उज्जयिनी)
15.शूरसेन	मथुरा
16.मत्स्यनगर	विराट नगर

मगध राज्य का इतिहास

हर्यक वंश (544–412 B.C.)

1. बिम्बिसार :–
- मत्स्य पुराण में इसे क्षत्रोजस कहा है ।
- जैन साहित्य में – श्रेणिक/श्रेणिक
- कोसल के शासक प्रसेनजीत की बहन कोशला देवी से विवाह किया
- अंग के शासक चेटक की पुत्री चैल्लना से विवाह किया ।
- मद्रप्रदेश की राजकुमारी क्षेमा/खेमा से विवाह किया
- अंग प्रदेश को जीतकर अजातशत्रु को गवर्नर नियुक्त किया ।
- चिकित्सक जीवक को अवन्ती के शासक चंड प्रद्योत के दरबार में भेजा ।

2. अजातशत्रु :–
- कुणिक नाम से प्रसिद्ध
- मंत्री वस्सकार को फूट डालने के लिए वज्जी संघ भेजा तथा वैशाली का विलय मगध में किया
- रथमूसल एवं महाशिलाकंटक का प्रयोग इसके समय हुआ ।
- सप्तपर्णी गुफा में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन करवाया ।

3. उदायिन/उदयन :–
– सोन एवं गंगा नदी के किनारे पाटलीपुत्र की स्थापना

शिशुनाग वंश :–

1. शिशुनागः–
– वैशाली को राजधानी बनाया ।

2. कालाशोक :–
- द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन करवाया ।
- पाटलीपुत्र को पुनः राजधानी बनाया ।

नन्द वंश :–

1. महापद्म नन्द :–
- (परशुराम) "भार्गव" कहते हैं । (सर्वक्षत्रांतक भी)
- जैन धर्म को संरक्षण दिया ।
- हाथीगुफा अभिलेख– इसके अनुसार इसने कलिंग को जीता । कलिंग में नहर का निर्माण करवाया । वहाँ से जिनसेन की मूर्ति लाया ।
- पुराणों में नन्द वंश के शासकों को (शूद्र) कहा गया है ।

2. धानानन्द :–
चन्द्रगुप्त मौर्य ने इसकी हत्या कर दी । (322 B.C. में) सिकन्दर के समकालीन